बिहार में कृषि की सम्भावनाएँ और सीमाएँ

डॉ0 मलय कुमार

बिहार जैसे राज्यों में आर्थिक गतिविधियाँ कृषि और सहवर्ती क्षेत्रों के विकास के साथ घनिष्ठता से जुड़ी हुई हैं क्योंकि खाद्य एवं पोषण सम्बन्धी सुरक्षा से इनका मजबूत सम्बन्ध है। यह क्षेत्र खाद्य पदार्थों की आपूर्ति ही नहीं बढ़ाता है, रोजगार के अवसर भी पैदा करता है, जीविका के अवसरों में भी सुधार लाता है और गरीबी निवारण भी करता है। विगत दो दशकों में बिहार की अर्थव्यवस्था में ढाँचागत बदलाव आया है जो सकल राज्य घरेलू उत्पाद की क्षेत्रगत संरचना में कृषि क्षेत्र से सेवा क्षेत्र की ओर अग्रसर होने को स्पष्ट करता है। ''तृतीयक क्षेत्र के हिस्से में वृद्धि के कारण राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र का सापेक्ष हिस्सा 2000–01 के 35.8ः से घटकर 2017–18 में रह गया, ऐसा तृतीयक क्षेत्र के हिस्से में वृद्धि के कारण हुआ। हालांकि इसका जारी महत्व इस बात में निहित है कि राज्य की 70ः से भी अधिक आबादी कृषि कार्यों में लगी है। वर्ष 2000 में राज्य के विभाजन के बाद अधिकांश खनिज संसाधन झारखंड वाले क्षेत्र में चले गये। अतः सक्षम कृषि व्यवस्था बिहार में समग्र आर्थिक विकास की विकासमूलक रणनीति का एक महत्वपूर्ण अंग बन जाती है। कृषि क्षेत्र में उच्च और टिकाऊ विकास हासिल करना खेती में और खेती के बाद रोजगार के अवसर पैदा करने तथा आमदनी, खासकर गरीबों की आमदनी बढ़ाने, दोनों के लिहाज से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।''